CONTENTS

INDEX

TITLE	Page(s)
"भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में गान्धीवादी और तिलकवादी दो गुटः एक उद्देश्य की ओर, 1918–1921" – डा0 नीलम कौशिक	01
ROLE OF TEACHERS AND STUDENTS FOR DEVELOPING LIFE SKILLS - **Dr. Girdhar Lal Sharma**	17
Security Pricing Movement: A Study of Selected Banks in India - **Pramod Kumar Singhal**	23
A Study of Occupational Adjustment in relation to Emotional Intelligence and Spiritual Intelligence and among Senior Secondary School's Teachers - **Sonia Sharma**	29
Women's Education: A study of Rural India - **Dr Deependra Sharma**	40

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522

DVS International Journal of Multi-Disciplinary Research ISSN NO 2454-7522
ISSUE: 10 Vol: 03, No. 02 October – December 2017

"भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में गान्धीवादी और तिलकवादी दो गुटः एक उद्देश्य की ओर, 1918–1921"

डा0 नीलम कौशिक (शोधार्थिनी)
दीवान इन्स्टीट्यूट ऑफ मैनिजमैन्ट स्टडीज
(कॉलेज ऑफ एजूकेशन स्टडीज)
चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

डा0 एस0 के0 शर्मा (शोधार्थी)
नटराज इन्स्टीट्यूट ऑफ एजूकेशन एण्ड टैक्नालॉजी
पूठा, जहाँगीराबाद, बुलन्दशहर (उ0प्र0)
चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

1914 और 1919 के बीच कांगेस में दो विरोधी प्रवृत्तियों का जन्म हुआ। एक तरफ पुर्व नरमपंथियों और अतिवादियों ने अपने कुछ अंतर स्पष्ट किये और पुराने नरमपंथियों की मृत्यु के बाद बाल गंगाधर तिलक सन् 1916 में होम रूल लीग में अपने समर्थकों के साथ कांगेस में वापस चले गये। इसी समय, जानीमानी वृहमसमात्री श्रीमती ऐनी बेसेन्ट अपने समर्थकों के साथ पुनः कांगेस में शामिल हुई। जब बडे राष्ट्रवादियों ने राजनीतिक सहयोग के लिए अनुबंध किया, विवाद के निपटारे के लिए सन् 1916 में लखनऊ कांगेस तक प्रयास जारी रहे।

कांगेस में नई असहमंतियों की भूमिका मात्र थी। श्रीमती वेसेन्ट और तिलक ने देश के विभिन्न भागों में अपने–अपने सहयोगियों पर नियंत्रण बनाये रखा। इसी समय कई पर्व नरमंपथिओं ने कांगेस के अधिकाधिक आंदोलित रवैया के कारण स्वयं को अलग–थलग महसूस किया। यह श्रीमती बेसेन्ट और तिलक के प्रभाव के कारण था। इसका परिणाम यह हुआ कि 1918 में उन्होंने इण्डियन लिवरल पार्टी बनाने के लिए कांगेस को छोड दिया।

राजनैतिक परिदृश्य में मोहनदास करमचन्द्र गाँधी का उदय, कांगेस में एक नई बात लेकर हुआ। गाँधी केवल कांग्रेस के नेतृत्व के ही आकांक्षी नहीं थे, बल्कि उनके विचार और आन्दोलन के तरीके तिलक और श्रीमती बेसेन्ट से पूर्णरूप से भिन्न थे। उनका 1919 में खिलाफत आन्दोलन के समर्थन के निर्णय ने, कांग्रेस के बहुत सारे नेताओं को सन्देह में डाल दिया। दन शंकाओं में भावी मतभेदों एवं संगठन में नई वैचारिक गुटबन्दियों का पूर्व आभास करा दिया था।

सितम्बर 1920 में विशेष कांग्रेस अधिवेशन के दौरान कांग्रेस द्वारा असहयोग की स्वीकृति

कांग्रेस में नई विचारधारा वाले समूह के विकास की सूचक थी। इसमें गांधी द्वारा संचालित वह समूह शामिल था जिसमें असहयोग के लिए नई रणनीति का अनुमोदन किया गया था, चाहें वह कांग्रेस में हो या सहयोगी खिलाफत कमेटी में। अन्य समूह ने तिलक समर्थकों और अन्य जैसे वे कांग्रेस जन शामिल किये जो गांधी के असहयोग में विश्वास के भागीदार नहीं थे। न हीं वे कांग्रेस के नेतृत्व को स्वीकारते थे। उनकी राजनीतिक रणनीति सवैधानिक उन्नति के दौरान नये सुधारों के साथ इस प्रकार के समझौता की सुविधा में समाहित थी। 1918–1919 के सुधारों के बाद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के विभाजनों ने भविष्य की योजना को क्रियान्वयन हेतु समर्थन प्राप्त करना आसान कर दिया। विभिन्न दल इस बात पर सहमत न हो सके कि सरकारी रियायतें सुधारों में बदलाव लायेगी। एक बड़ा मुद्दा प्रांतों की स्वायत्तता से संबंधित था। इस समय की राजनीति, प्रत्येक राज्य में, एक खास परिस्थितियों के कारण, निर्देशित थी, और प्रत्येक सूबे के राजनीतिज्ञ, सुधारों में शक्ति आने की संभावनाओं के द्वारा प्रभाव में थे, चाहे वह प्रादेशिक स्वशासन सम्बन्धी विशेष माँग हो या अन्य कुछ।[1]

परिणामस्वरूप सम्पूर्ण भारत के सहयोगियों में 3 समूह (स्वतंत्र) उदित हुए। सबसे बड़ा गुट पूना में तिलक और कलकत्ता में चितरंजनदास द्वारा संचालित था। यह स्वच्छंद रूप से राष्ट्रवादी था, और तिलक के होमरूल लीग का सहयोगी था। दूसरा गुट श्रीमती बेसेन्ट द्वारा संचालित था। यह ब्रहमसमाज के द्वारा संगठित था, और 1919 के मध्य से उसके अधिकांशः समर्थक ब्रहमसमाजी थे। तीसरा गुट नरमपंथियों का कांग्रेस के बाहर का था, जिसपर कांग्रेस ने 1917 में नियंत्रण खोया था। 1918 तक राष्ट्रवादियों के नियंत्रण के बाद में यह लिबरलपार्टी हो गया।[2]

राष्ट्रवादियों की बंगाल और महाराष्ट्र में पक्की पकड़ थी, किन्तु बेसेन्ट के होमरूल लीग के विखराव के बाद उन्हें संयुक्त प्रांतों में मद्रास में एस कस्तूरी रंगा आयंगर व मोतीलाल नेहरू की पार्टी के जरिये अतिरिक्त समर्थन मिला। मोतीलाल नेहरू और आयंगर दोनों ही प्रादेशिक स्वायत्तता, कृषक और श्रमिकों के बीच आंदोलन के विस्तार की माँग पर श्रीमती बेसेन्ट से अलग हो गये थे। लिवरल और श्रीमती बेसेन्ट से भिन्न, राष्ट्रवादी पूर्व प्रादेशिक स्वशासन के अतिरिक्त व्यापारिक एकता और कृषक संगठनों के

निमार्ण और आंदोलन के लिए तैयार थे।[3]

तिलक स्वयं 1919 में हुए भारतीय राजनीति में होने वाले क्लेश से जागरूक थे। उन्होनें जी0पी0 खापर्डे को चेतावनी दी कि, यह कलह उचित नहीं होगी। वह डरते थे कि, उनका स्वराज्य आन्दोलन श्रीमती वेसेन्ट को अलग–अलग कर देगा और एक बिपरीत प्रभाव धारण कर लेगा, जो उचित न होगा। बाद में तिलक ने खापर्डे को सुझाव दिया कि, वह श्रीमती बेसेन्ट को कांग्रेस प्रतिनिधि मण्डल में शामिल का आग्रह करें।

"श्रीमती बेसेन्ट बहुत उपयोगी होगी, और मैं सोचता हूँ, कि हम अपने मतभेदों का उसके साथ बैठकर निबटारे कर सकते हैं। ज बवह वहां आती थी और अपनी आँखों से यहां देखती थी कि यहां कितना बोझ पड़ा है। मैं सुनिश्चितता हूँ।"[4]

फिर भी मित्रता के सहारे प्रयास विफल हो गये थे, और अब भी बेसेन्ट 1919 में इंगलैण्ड चली गयी, यह उसका स्वयं का स्वराज्य आन्दोलन का प्रतिलिधि मण्डल था, जिसमे जमना दास, द्वारका दास, पी0के0 तेलंग और वी0पी0 वाडिया जैसे लोग शामिल थे। वह तिलक से इंगलैण्ड दौरे के द्वारा अलग रहीं ऐसी ही अन्तरकलह कमेटी में भी देखी जा सकती थी।[5]

इस प्रकार तिलक 1919 तक, कांग्रेस में प्रभावशाली रहे, किन्तु वह विभिन्न बिचारों एवं दृष्टिकोंणों वाले लोगों को एक नहीं कर सके। 1919 तक वह इंग्लैण्ड तथा भारत दोनों में कांग्रेस मशीनरी पर नियंत्रण बनाये रखने में सफल रहे। किन्तु बहुत से कांग्रेसियों का समर्थन जुटाने में असफल रहे। 1919 तक राजनैतिक कलह, जिसने राष्ट्रवादी आन्दोलन की शक्तियों को फैलाया। 1907 की तुलना में बुरी अवस्था में था। कम से कम 5 गुट जो संघर्षशील प्रतिनिधि मण्डल का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, 1919 में इंग्लैण्ड में थे।[6]

ऐसे वातावरण में, गांधी जी 1919 में, असहयोग आन्दोलन का ऐलान कर सबको एकता के सूत्र बाँधते हुए अवतरित हुए। सर्वप्रथम 1919 में वह कांग्रेस सत्र में अपने गुरू गोपाल कृष्ण गोखले के

दुष्टिकोंण को देखने में सफल रहे। वह आश्वस्त थे कि नरमवाद तथा सहयोग आवश्यक थे। यद्यपि 1919 के सुधार आशाओं के अनुरूप नहीं थे। किन्तु गांधी की अपेक्षा तिलक को लोग 1919 तक अपना नेता मानते थे। तिलक ने माना कि कांग्रेस स्वराज्य के लिए लडेगी तथा चितरंजन दास तथा विपिन चन्दपाल ने बंगाल तथा महाराष्ट्र में तिलक के समर्थन में प्रतिनिधि किया।[7]

दूसरे लोग गांधीजी के तथा मदनमोहन मालवीय के साथ हो गये। एक समय के लिए, हमें ऐसा प्रतीत हुआ कि, कांग्रेस में एक विभाजन होना सुनिश्चित है। गांधी जी का विश्वास था, कि केवल नैतिक माध्यम से ही सुधारों को जाना जा सकता है। जबकि तिलक का मत था कि सुधार सशर्त स्वीकारे जाये किन्तु स्वराज्य हमारा अन्तिम लक्ष्य है।[8]

यह समझौता अंततः सुधारों के इस विश्लेषण कि वे आवश्यकता से अधिक छोटे हैं, और कि केवल नौकरशाही का सहयोग कांग्रेस में सहयोग लायेगा, के साथ ब्रिटिश सरकार के साथ गया। यह पूर्णतः केवल असंतुष्टि थी किन्तु अधिवेशन का समापन सभी पक्षों में अच्छी साख होने के साथ हुआ।[9]

फिर भी तिलक के लिए 1919 की घटनाऐं, कांग्रेस का नेतृत्व गांधी के पक्ष में जाने के कारण अलाभकारी थीं। इन घटनाओं का उदय रोलेट एक्ट के कारण था। यह मार्च 1919 में भारतीय विधान परिषद में पारित 'राजद्रोह अधिकारों' के दमन हेतु जायजा लेना भर था। इसी अधिनियम के तहत गांधी ने देश को एक सूत्र में पिरोकर सत्याग्रह की नई रणनीति का उद्घाटन किया।

गांधी ने 30 मार्च 1919 का दिन रोलेट विल्स के विरूद्व अहिंसक प्रदर्शन और 'शोक का दिन' घोषित किया। परिणामस्वरूप दिल्ली, पंजाब और देश के अन्य कई भागों में प्रदर्शन हुए। फिर भी सत्याग्रह रोकने के लिए हुए दंगों और पुलिस कार्यवाही में बडी तादाद में लोग जख्मी हुए। परिणामस्वरूप 6 अप्रैल की मृतकों के लिए याद में गांधी जी ने हड़ताल का आवाहन किया। एक बार फिर, कई स्थानों पर हिंसा और प्रदर्शन किया, गांधी इस असफलता के बाबजूद भी, गांधी ने एक महत्वपूर्ण विजय हांसिल की।[10] अनिश्चित और भ्रांतिक परिस्थितियों का लाभ उठाते हुए वह कांग्रेसीजनों का स्थापित और नये लोग चाइे

असंतुष्टों द्वारा या अनिश्चितता, जैसा वे लोग कांग्रेस के पदानुक्रम में अपनी हैसियत को सुधारने या पुनः प्राप्त करने प्रयत्न करने वाले हो, में एक नेता के रूप में उदय हुए। यह वह प्रसंग था जिसमें गांधी ने समर्थन और एक नीति जिसमें वह भारत को अपने नेतृत्व में एक सूत्र में बाँधना चाहते थे, का प्रयास किया।[11]

1919 में गांधी ने अपने गृह प्रांत गुजरात के बाहर आधार बनाया। श्रीमती बेसेन्ट की होतरूल लीग की बम्बई शाखा, जिसे उन्होंने सत्याग्रह के समय प्रयोग किया था, का समर्थन उन्होंने हांसिल किया। किन्तु गांधी किसी भी भारतीय गठजोड की पार्टी का नियन्त्रण नहीं कर पाये। 1919 के दौरान, गांधी ने बाहर के लोगों का एक स्वतंत्र समूह बनाने का प्रयास किया, जैसा उनकी स्थापित सहयोगी, होमरूल लीग और कांग्रेस ने किया था। किन्तु जब उनका सत्याग्रह, असफल हो गया, सुभाष ने प्रचार को खत्म कर दिया। गांधी ने स्वयं को एक बदली हुई नीति के परिवर्तित राजनैतिक नेता के रूप में खड़ा पाया।[12]

अगस्त 1919 और 1920 के बीच गांधी ने धीरे–धीरे अपनी रण्नीति अपनी स्थिति को कायम रखने के लिए बदलना शुरू कर दिया। ऐसा करने के लिए उन्होंने अपना ही राजनैतिक संगठन खड़ा करने पर विशेष बल दिया और राजनैतिक शंकाओं जैसे होमरूल लीग और केन्द्रीय खिलाफत कमेटी में अधिक क्रियाशील होने के लिए बल दिया।[13] तब सितम्बर 1919 में कलकत्ता में गांधी कांग्रेस में हावी हो गये। वह ऐसा करने के लिए एक अभियान संगठित करने में सफल हो गये, और परम्परागत राजनीति के अन्दर एक नये दूत के रूप में उभर कर आये, क्रान्तिकारी व्यवस्था के अन्दर नहीं।[14]

गांधी की खिलाफत आन्दोलन के साथ सम्बद्धता, आने वाले समय में कांग्रेस में उनके नेतृत्व के लिए, एक महत्वपूर्ण प्राकथन था। अगस्त 1919 में खिलाफत कमेटी द्वारा आयोजित एक सम्मेलन में गांधी एक मात्र हिन्दू के रूप में सम्मिलित हुए और स्वयं ही धीरे–धीरे मुस्लिम मांगों से जुड़ गये। उन्होंने खिलाफत कमेटी को अपने उद्देश्यों और दिशा के लिए प्रयोग किया। दस हजार हिन्दुओं के नैतिक

समर्थन के साथ उन्होंने आग्रह किया कि मुस्लिम लोग अपनी स्वयं की सरकार खड़ी कर सकते हैं।[15] इस प्रकार गांधी ने खिलाफत आन्दोलन का पूरा ध्यान दिया और उन्हें एक राजनीतिक संगठन खड़ा करने के लिए मौका दिया, जिससे वे अपने विचारों को प्रकट कर सकें।[16]

गांधी 1919 में एक नये आत्मविश्वास के साथ जो देश के विभिन्न भागों में फैला हुआ था, अमृतसर पहुँचे। कांग्रेस में गांधी, मालवीय से जुड़ गये, जो हिन्दू पुनरोत्थान के प्रतिनिधि थे और इस तरह से उत्तर भारतीयों के हितों को पुरानी बंगाल और महाराष्ट्र के प्रभुत्व को चुनौती देने के योग्य बनाया। उसी समय गांधी ने जानबूझकर राष्ट्रवादी नेताओं को नकारा जो होरूल आन्दोलन के उदय के साथ कांग्रेस में शक्ति के साथ उभरे थे।[17]

कांग्रेस में तिलक की स्थिति असुरक्षित होती जा रही थी। नवम्बर में उन्होंने निर्णय लिया कि कांग्रेसी नेता के रूप में उनकी स्थिति खतरे में पड़ती जा रही है और वे इंग्लैण्ड़ में और अधिक नहीं रह सकते हैं। इस प्रकार 1919 में वह वार्षिक सत्र में शामिल होने के लिए भारत लौट आये। सचमुच में अमृतसर अधिवेशन की यात्रा के समय तिलक ने सुधारों पर अपनी स्थिति को और अधिक बल दिया और गांधी और सत्याग्रह की अपेक्षा की।[18]

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522

सचमुच में यही कारण था कि तिलक की यह नई संकल्पना अत्यधिक प्रतीत हुई। चूँकि सरकार ने समस्त राजनैतिक कैदियों की रिहाई की घोषणा कर दी थी, तथा तिलक ने सुधारवादी अपनी इन नीति को पूर्णरूप से उत्तर दिया।[19] इस समय तक तिलक एक संशोधित संविधान के साथ कार्य करना चाहते थे और ब्रिटिश प्रणाली के अन्दर स्वराज्य के लिए लड़ना चाहते थे। उसके साथ–साथ तिलक ने स्वयं को पूर्व राजनैतिक नीतियों के खिलाफ घोषित कर दिया, जो गांधी के द्वारा चलाये जा रहे थे।[20]

गांधी और तिलक के बीच नीतिगत विपरीत प्रसंगों और गांधी के बढते प्रभाव में लोकमान्य ने महसूस किया कि वह कांग्रेस को नियंत्रण करने हेतु संघर्ष की ओर अधिक समय के लिए स्थापित नहीं कर

सकते। इसीलिए 18 अप्रैल 1920, तिलक ने नई राजनैतिक पार्टी का घोषणपत्र प्रकाशित किया जिसे उन्होंने स्थापित करने के लिए आगे बढ़ाया। कांग्रेस लोकतांत्रिक पार्टी नाम का यह दल कांग्रेस के प्रति पूर्व निष्ठावान और दृढ़ता से कांग्रेस के कार्यक्रम में अपना विश्वास प्रकट करने वाला था। इसके शुभारम्भ के समय तिलक लिखते है–

"माटेग्यूऐक्ट पर कार्य हेतु शिक्षण, आंदोलन और संगठन करो, सभी के लिए आवश्यक है कि जिम्मेदार सरकार के अनुशासन पर नियंत्रण हो और इसके लिए बिना हिचकिचाहट के साथ मिलकर कार्य करने का प्रस्ताव हो और संवैधानिक विरोधो का सहारा, जब भी लाभदायक और प्रचलित मुद्दे पर प्रभाव हेतु सर्वोत्तम परिकलन देने हों, आवश्यक है।"[21]

परिवर्तनशील राजनैलिक नेतृत्व पैदा करने का तिलक का प्रयास, और कांग्रेस की रणनीति जो आगामी संगठन की थी, गांधी के पक्ष में रही। अब उन्होंने असहयोग की प्रतिकूल रणनीति में सहयोग जीतने और प्रचार की ओर रूख किया। यह कदम हीमरूल लीग के नये संमर्थन, खास तौर से कांग्रेस, नये मुस्लिम समर्थन के प्रयास से जुड़ा था।[22]

खिलाफत पर गांधी का घोषणा पत्र का प्रकाशन, इस प्रचार का पहला बड़ा कदम था। 7 मार्च 1920 को, प्रथमबार, उन्होंने असहयोग आंदोलन की स्वीकृति के लिए अनुरोध किया, यदि न्यूनतम मुसलमानों की माँगें नहीं मानी गयी। यद्यपि हिन्दू सहयोग के साथ, उन्होंने थोड़ा सा असहयोग के बारे में कहा।[23]

गांधी के खिलाफत आंदोलन के जुड़ाव ने आंदोलन और असहयोग दोनें के लिए समर्थन हासिल करने में मदद की। 1919 ई0 में असहयोग, रोलेट आंदोलन, में हुई हिंसा के कारण बदनामी का कारण बना। खिलाफत कमेटी स्वयं गुटबंदी से प्रभावित थी। परिणामस्वरूप गांधी का कमेटी के साथ जुड़ाव और इसके कार्यक्रमों को समर्थन, खिलाफत के लिए, और उन दिनों सत्याग्रह के प्रयोग ने, सत्याग्रह को जनता की आँखों के सामने रखने में मदद की। उन्होंने स्वयं खिलाफत कमेटी को स्वयं के असहयोग करने पर

समझाया।[24]

गांधी ने एक अन्य कदम, जो उनके राजनैतिक आधार को विस्तारित करना था, के साथ खिलाफत आंदोलन का अनुसरण किया। 28 अप्रैल 1920 को उन्होंने घोषणा की कि उन्होंने ऑल इण्डिया होमरूल लीग को शामिल कर लिया है, जिसे श्रीमती बेसेन्ट ने जुलाई 1919 में बेदखल कर दिया था। गांधी ने प्रैस को बताया कि उन्होंने खिलाफत कमेटी के अतिरिक्त संगठन को, स्वयं की सेवाऐं प्रदान करने के लिए खोजा है। तब उन्होंने, अब तक का, सर्वाधिक समर्थन जीतने हेतु, परिकलित कार्यक्रम की घोषणा की। अपने कार्यक्रम में गांधी ने विशेषतः स्वदेशी, खिलाफत के आधार पर हिन्दू–मुस्लिम एकता, हिन्दुस्तानी की भाषाई पहचान की स्वीकृति, प्रांतों की भाषाई आधार पर पहचान और अस्पृश्यता के उन्मूलन की घोषणा की।[25] गांधी के कथन के अगले कदम में, अब तिलक को उनके असहयोग के प्रस्तावो को परिभाषित करने की बारी थी। यह उसे, जून 1920 की, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की बनारस मीटिंग, में लाना था। फिर भी कोई निर्णय नहीं लिया गया, क्योंकि सितम्बर में कलकत्ता में होने वाली कांग्रेस की विशेष मीटिंग को स्थगित कर दिया गया था। जैसा पहले से तय था, कि तिलक और लाजपतराय प्रस्ताव के विरूद्ध थे, और असहयोग की सफलता की कठिनाईयों को व्यवहारिक महत्व देते थे। बंगाल के नेता शांत थे। मुस्लिम लीग की समिति और इसके अध्यक्ष मुहम्मद अली जिन्ना ने खुली बहस में हिस्सा नहीं लिया। सभा के बाद, एक साक्षात्कार में, तिलक ने विचार प्रस्तुत किया, कि कांग्रेस को, असहयोग आंदोलन के बारे में तब तक कुछ नहीं करना चाहिए, जब तक कि मुसलमान, इस सम्बन्ध में, निश्चित रास्ता, अख्तयार नहीं कर लेते।[26]

चतुराई से गांधी, इस घोषित योजना के, स्पष्ट वहिष्कार से बचे। परिणामस्वरूप जुलाई 1920 तक, नेताओं के लिए, गांधी का असहयोग आंदोलन और चुनाव संघर्ष दोनो का समर्थन करना पूर्ण संभव था। वास्तव में खिलाफत कमेटी, के सदस्य भी चुनाव में सहभागी बनना चाहते थे, और उन्होंने खिलाफत मुद्दे को, एक विशेष मुद्दे के रूप में, समर्थन किया।[27]

इस प्रकार अगस्त 1920 तक, असयोग के सम्बन्ध में निम्नलिखित प्रस्ताव सम्मिलित किये।

पहला–उपाधियों का त्याग और अवैतनिक सम्मानित पदों का त्याग, दूसरा पुलिस और सेना से इस्तीफा, और तीसरा–करों का अदायगी का निलम्बन। कुछ बदलावों के साथ यह वही कार्यक्रम था, जिसे गांधी ने हिन्दू और मुस्लिमों की जून 1920 में इलाहाबाद में आयोजित सभा में रखा था। जब मोतीलाल नेहरू, तेजबहादुर सप्रू, मदनमोहन मालवीय और लाजपतराय सभी असहयोग के विरूद्ध बोले और डरी हुई आवाज में कहा कि यह अफगान हमलें की तरह उतावलापन हो सकता है।[28]

नेतृत्व के चुनाव के जटिल मुद्दे और कांग्रेस की रणनीति के बीच तिलक गुजर गये। जुलाई में उन्हें निमोनिया हो गया, जिससे वह उभर न सके। 1 अगस्त 1920 को तिलक नहीं रहे।[29] यह एक विशेष घटना थी कि गांधी ने अगले सत्याग्रह आंदोलन के शुरूआत की घोषण उसी दिन की। खिलाफत की जिम्मेदारी पर ''जिसका उपवासें और प्रार्थनाओं धार्मिक क्रियाकलापों के द्वारा निर्धारण, होना था।''[30] गांधी, अब एक, नई विजय की ओर मुड़े। 1920 में कलकत्ता में कांग्रेस के विशेष सत्र, जिसने असहयोग का समर्थन किया, गांधी ने स्वयं विधानसभाओं में वहिष्कार सहित पूर्ण असहयोग करने का निश्चय किया। गांधी जी उदारवादियों और तिलक समर्थकों के विरूद्ध सुधारों का चिप्पा लगाकर उभरे। जैसे एक खलनायक जाल, जिसने चमकीली जंजीर को छिपा लिया, जिसने कि देश को दास बनाया। इसके विपरीत उन्होंने भारत को स्वतंत्रता प्रदान करने के लिए प्रस्तावना तैयार की और भारत को पूर्ण असहयोग आंदोलन प्रदान करने का भी गांधी का दृढ़ निश्चय बहुमत के साथ स्वीकृत हुआ।

सितम्बर 1920 में कलकत्ता में, कांग्रेस में यह स्वीकार किया गया, कि सभाओं का वहिष्कार एक विवादास्पद मुद्दा है। गांधी ने इसे अपने असहयोग में जुलाई 1920 तक केवल राष्ट्रवादियों और तिलक समर्थकों को एवं ऐसी स्थिति में लाने के लिए सम्मिलित किया, जहाँउन्हें या तो इसका बिधिबत् वहिष्कार करना पड़े या असहयोग को पूर्ण रूप से लिरस्त करना पड़े।[33] इस प्रकार बहिष्कार के मुद्दे ने, गांधी के कार्यक्रम में जटिल समस्या उत्पन्न की, और यह गांधी का कांग्रेस के नेतृत्व का परीक्षण भी था। यद्यपि उन्हें कुठ विरोधियों के वहिष्कार और तिलक समर्थकों के निश्चय के समक्ष भिड़ना पड़ा। किन्तु गांधी ने

दिसम्बर में कांग्रेस के नागपुर अधिवेशेन में इस कार्यक्रम की तैयारी की स्वीकृति के लिए प्र्याप्त समर्थन प्राप्त किया। कलकत्ता से गांधी की जीत निम्न आधार पर टिकी थी। उन्हे मुस्लिम नेताओं के बीच मजबूत समर्थन मिला, क्योंकि उन्होंने खिलाफत आंदोलन में उनका समर्थन किया था। नये राजनैतिक क्षेत्र जैसे गुजरात ने भी गांधी को समर्थन किया। गांधी की तरफ कई कर्तव्यशील व्यक्ति थे, जैसे मोतीलाल नेहरू, एक निशान्त प्रभावशाली राजनेता थे। सभाओं में प्रवेश के अन्य समर्थक भी समझौते के लिए तैयार थे। जब उन्होंने स्वयं को उदारवादियों और बेसेन्ट के समर्थकों से जुड़ा हुआ पाया। परिणामस्वरूप, गांधी ने कम बहुमत के बाबजूद न केवल खुले सत्र में अपितु विशेष समिति के समक्ष दिन का निर्धारण किया।

जैसा कि, पूर्व निर्धारित था, गांधी ने नागपुर कांग्रेस के पूर्ववर्ती राजनेताओं के विरोध का सामना किया। कुछ राज्यों में जैसे कि केन्द्रीय राज्यों में, स्कूलों और कालेजों का वहिष्कार, अनुचित माना गया।[34] चितरंजनदास ने विधान सभाओं में प्रवेश के लिए और असहयोग के विरूद्ध रैली, जुलाई 1 अधिकांशतः[35] महत्वपूर्ण क्षेत्रीय नेताओं जैसे कि वनारस के मालनीय ने असहयोग का आंशिक विरोध किया। जिन्ना और श्रीमती बेसेन्ट इसके पूर्णतया विरूद्ध थे।[36]

गांधी की स्थिति तब और मजबूत हो गयी, जब तिलक समर्थकों ने दिसम्बर 1920 में विधानसभा चुनावों से अलग रहने का निर्णय लिया। कलकत्ता में उनकी पराजय ने राष्ट्रवादियों को मुश्किल में डाल दिया और कांग्रेस से बाहर उनका राजनैतिक भविष्य दुखमय प्रतीत होने लगा। दो महत्वपूर्ण प्रान्तों बंगाल और महाराष्ट्र में राष्ट्रवादियों ने चुनाव से न चुनावी घोषणपत्र की वापसी को मृद्दा बनाया। लेकिन उन्होंने गोर किया कि उन्होंने विधानसभाओं के वहिष्कार का विरोध किया है, और भविष्य की नीति पर कांग्रेस कार्यक्रम को परिवर्तन करना सुरक्षित रखा है।[37]

गांधी इस विजय से, नागपुर कांग्रेस, में जयघोष की ओर बढ़े। वहीं उन्होंने स्वयं को वहुसमर्पित दिखाते हुए और नये राज्यों में प्रतिनिधियों की उपस्थिति के द्वारा, जो कि बंगाल और महाराष्ट्र में कांग्रेस कमेटी अधिसंख्यक थे, स्थिति नियंत्रक सिद्ध किया। परिणामस्वरूप,

"नागपुर के उदारवादियों की कोई बात नहीं सुनी गई। उग्रवादियों जो कि खापर्डे और मुंज के साथ थे, एक तरफ कर दिये गये। मदनमोहन मालवीय का प्रयास प्रभावहीन हो गया। जिन्ना कोई प्रभाव न छोड़ सके, लाजपतराय डाँवाडोल हो गये और तब शान्त हो गये।"[38]

संदर्भित समिति में कांग्रेस के स्वरूप में परिवर्तन के लिए एक लम्बी बार्ता हुई। अधिक हिंसक प्रस्ताव, अली बन्धुओं के भरसक प्रयासों के बाबजूद भी विफल हो गये और गांधी बहुमत के साथ उभर कर आये। उनका मंत्र स्वराज्य के लिए वैधनिक एवं शांतिप्रिय साधनों के माध्यम से प्राप्ति का[39] जिन्ना, सी0आर0 दास, बी0सी0 पाल एवं मदनमोहन मालवीय द्वारा विरोध किया गया। दूसरे लोगो ने भी गांधी का विरोध करने का भरसक प्रयन्त किया, किन्तु विफल हो गये।[40]

गांधी जी असहयोग आन्दोलन की प्रगति से संतुष्ठ थे। कांग्रेस के पृष्ठांकन को छोड़कर आन्दोलन पूरे देश के विभिन्न भागों में प्रचारित एवं प्रसारित हो गया। जनता के प्रचार एवं प्रसार के परिणामस्वरूप यह बहुत लोकप्रिय हो गया था और कांग्रेस के बाद भी यह अधिक प्रभावशाली प्रचार बना रहा जो सीधा असहयोग आन्दोलन की ओर ले गया, जनता एवं शिक्षित वर्गो के मध्य था।[41]

सी0आर0 दास के नागपुर में गांधी जी की ओर मुड़ जाने के सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा जा चुका है। यह दास थे, जिन्होंने असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव कांग्रेस के मध्य रखा और जिनकी अत्यधिक प्रशंसा हुई।[42] किन्तु कांग्रेस के सामने अन्तिम प्रस्ताव जो प्रस्तावित किया गया था। भिन्न था, किन्तु सिद्धान्त और सच्चे अर्थो में गांधी के असहयोग आन्दोलन की आत्मा ही था। इसमें कार्यक्रम के चार चरणों का संकल्प लिया गया, कार्य करने वाले कर्मचारियों को राष्ट्रीय सेवा के रूप में देखा जाये, तिलक के फण्ड के लिए पैसा इकट्ठा किया जाये, आर्थिक वहिष्कार किया जायें, और प्रत्येक गॉव में कांग्रेस समिति स्थापित की जाये, अन्य बातें गांधी की योजना के अनुसार जोड़ दी गयीं। ये सारी बातें सी0आर0 दास के प्रस्तावों से ली गयी थीं।

"जैसा सुभाष चन्द्र बोस ने इंगित किया, सी0आर0 दास नागपुर में गांधी में आत्मसात नहीं हुए, बल्कि वह एक समझौते के साथ उनसे मिल गये, ये समझौते के कौन से मानक थे, उनको जानने का कोई भी रास्ता नहीं है। किन्तु नागपुर में गांधी के एक वर्ष के अन्दर ही स्वराज्य स्थापित करने के वायदे पर मजबूती के साथ बल दिया गया। इस ओर बाद वाले कथनों द्वारा अन्य राष्ट्रवादियों ने ऐसा माना कि गांधी और राष्ट्रवादी केवल एक वर्ष तक असहयोग आन्दोलन कार्यक्रम के अन्तर्गत कार्य करेगें।"[43]

मद्रास और महाराष्ट्र के कांग्रेसियों की नागपुर में स्थिति का गांधी को पूरा लाभ मिला। मद्रास विधान परिषद के लिए 1920 में हुए चुनावों में, गैर ब्राह्मण जस्टिस पार्टी विजय हुई। परिणामस्वरूप बहुत से तमिल ब्राह्मणें नें अपनी निष्ठा गांधी में दिखाई और उनके नेता सी0 विजयाराघवाचार्य राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष हो गये। महाराष्ट्र के तिलकवादी असहयोग आन्दोलन के खिलाफ थे और उध्नहोंने खुलकर, गांधी के कार्यक्रम की आलोचना की। फिर भी वे कुछ हद तक, अलग–थलग रहे और उन्होंनं आन्दोलन को हिचक के साथ स्वीकारा और उन्हें पूरी आशा थी कि एक वर्ष के अन्दर ही, यह आन्दोलन विफल हो जायेगा।[44]

तिलकवादियों की असहयोग आन्दोलन के विरोध ने, देश के कुछ भागों में गांधी की रणनीति के सम्बन्ध में अविश्वास पैदा कर दिया। बहुत से राष्ट्रवादियों ने शिक्षा एवं न्यायालय के वहिष्कार का विरोध किया। महाराष्ट्र एवं अन्यत्र भी कुछ लोग वहिष्कार करने को अनइच्छुक थे। पुनः बहुत से राष्ट्रवादी विश्वास करते थे कि अस्थानीय निजी सरकारी संस्थाओं का वहिष्कार नहीं होना चाहिए। उदाहरण के लिए लाला लाजपतराय स्वयं भी लाहौर में 1921 में होने वाले निकाय चुनाव का वहिष्कार करने के विरोध में थे।[45]

असहयोग आन्दोलन की असफलता न तो लोगों के लिए और न अधिकारियों के लिए कल्याणकारी होगी। असहयोग हर कीमत पर एक शान्तिप्रिय आन्दोलन है, और शान्ति तरीके विफल होंगे तो लोग स्वतंत्र

होने के लिए हिंसा के तरीके अपना सकते हैं।[46]

किन्तु उस समय तक कांग्रेस में गांधी सर्वेसर्वो थे,, उनकी असहयोग आन्दोलन की नीति धीरे–धीरे क्रियाशील हो रही थी। जनवरी 1919 में यह परिणाम हुआ कि इस आन्दोलन में स्वदेशी, अदालतों का पंचायतों द्वारा वहिष्कार, महाविद्यालय और विश्वविद्यालयों का राष्ट्रीय विद्यालयों के माध्यम से वहिष्कार, विधान सभाओं का कांग्रेस संगठनों के माध्यम से और विदेशी वस्त्रों का खद्दर के द्वारा और नामित सदस्यों का त्यागपत्र के माध्यम से वहिष्कार उससे जुड़ गया। जैसा सीतारमैय्या ने कहा–

"ये सारी क्रियायें ब्रिटिश प्रतिष्ठा के बिनाश की प्रतीक थीं और उस अनैतिक बल की जिसके द्वारा ब्रिटेन भारत पर शासन कर रहा था। एक शानदार प्रतिउत्तर ने झूंठी पुरातन को विध्वंश करने मे मदद की।[47]

गांधी जी द्वारा नागपुर में दूसरी सबसे बड़ी उपलब्धि, उनके द्वारा कांग्रेस के लिए एक नये संविधान को प्रदान करना था। इस विधान में कांग्रेस के लिए प्रान्तीय भाषायी भाव, संगठन की सदस्यता के लिए चार आना और कांग्रेस के लिए एक संशोधित संगठनात्मक संरचना निहित थी। यह संविधान 1947 में स्वाधीनता में आने तक कार्य करता रहा।[48]

सन्दर्भ सूची

1. रिचार्ड गार्डन, **"नोन कॉपरेशन एण्ड काउन्सिल एन्ट्री 1919–1920"**आर्टीकिल पब्लिशड इन **मोडर्न एशियन स्टडीज,** वोल्यूम–7, 1973, पेज 445।
2. वही।
3. वही, पेज–446।
4. स्टानले ए0 वाल्पर्ट, **तिलक एण्ड गोखले : रिवोलूशन एण्ड रिफोर्म इन मेकिंग औफ मॉडर्न इण्डिया, कैलीफोनिया,** 1962, पेज–288।
5. वही, पेजें–288–289।
6. वही पेज–289।
7. टी0एल0 शेय, **लीगेसी ऑफ दी लोकामान्या : दी पॉलीटिकल फिलोसफी ऑफ बाल गंगाधर तिलक,** लंदन, 1956, पेज–1942।
8. वही, पेजें–142–143।
9. वही पेज–143।
10. 30 मार्च और 6 अप्रैल 1919 की इस घटना को देंखे, रवीन्द्र कुमार (एड0) **एस्सेज आन गान्धीयन,**

पालटिक्स, क्लेरनडोन प्रेस, 1971।

11. रिचार्ड गार्डन, जैसा पीछे, पेज–443।
12. वही।
13. वही।
14. वही।
15. वही, पेज–448।
16. वही।
17. वही।, पेज–453।
18. स्टानले ए बालपर्ट, **जैसा पीछे,** पेज–290।
19. वही, पेज–291।
20. वही।
21. वही, पेजें–282–293।
22. रिचार्ड गार्डन, **जैसा पीछे**, पेज–451।
23. वही।
24. वही।
25. वही, पेज–453।
26. वही, पेज–457।
27. वही, पेज–456।
28. वही, पेज–456–457।
29. स्टानले ए बालपर्ट, **जैसा पीछे,** पेज–293।
30. वही, पेज–294।
31. डेनियल आर्गोव, **मोडरेट्स एण्ड एक्सट्रीमिस्ट्स इन दी इण्डियन नेशनलिस्ट मोवमेंन्ट, 1883 से 1920,** लंदन, 1934T, पेज–167।
32. वही।
33. रिचार्ड गार्डन, **जैसा पीछे**, पेज–462।
34. होम पोलिटकल डिपार्टमेंट (इसके बाद एच.पी.डी. इस स्रोत को दशायेगा डी.) फाइल, 24।
35. वही, दिसम्बर 1920, (पॉलिटिकल सिचुएशन ऑफ सेन्ट्रल प्रोविन्सिस फोर सेकंड हाल्फ ऑफ सितम्बर 1920)।
36. वही, फाइल , 35 फरवरी, 1921 (पॉलिटिकल सिचुएशन ऑफ सेन्ट्रल प्रोविन्सेज फोर फर्स्ट हास्फ ऑफ दिसम्बर 1920)।
37. रिचार्ड गार्डन, **जैसा पीछे**, पेज–467–668।
38. वही, पेज–469।
39. वही।
40. वही।
41. वही।

42. रिचार्ड गार्डन, **जैसा पीछे**, पेज–470।
43. वही।
44. वही, पेंजे–472–473।
45. एच.पी.डी. (डी), मसर्च 1921 (वीकली रिपोर्ट ऑफ डायरेक्टर क्रिमिनल इन्टैलीजेंन्स, दिल्ली, 1 फरवरी 1921)।
46. वही, मई 1921, फाइल 19 (डायरेक्टर इन्टैलीजेन्ट बरयू, एन, एडाम, 14 जनवरी 1921)
47. पट्टाभि सीतारमैय्या, **नेशनलिस्ट मोवमेंन्ट इन इण्डिया, बॉम्बेय, 1950, पेज–43।**
देखें, एन.वी. रामन राव, डवलमेंन्ट ऑफ दी कांग्रेस कन्स्टीट्यूशन (ए.आई.सी.सी.), 1958,

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522